4. कण-कण का अधिकारी

I उन्मुखीकरण प्रश्नोत्तर :

प्र.1. गाँधीजी क्या करते थे?

उ. गाँधी जी अपना काम खुद करते थे। ये रोज सूत कातते, कपड़ा बुनते, और अनाज से कंकर चुनते थे। ये रोज चक्को भी चलाते थे।

प्र.2. गाँधी जी के अनुसार पूजनीय क्या है?

उ. गाँधीजी के अनुसार श्रम पूजनीय है।

प्र.3. हमारे जीवन में श्रम का क्या महत्व है?

उ. हमारे जीवन में श्रम का बहुत महत्व है। किसान मजदूर सभी रात-दिन काम करते हैं। श्रम से ही हमारी जाविका चलती है। श्रम करने से हम समाज में सम्मान के भाव सेदेखा जाता है। श्रम एक अमूल्य धन है। श्रम से हम जीवन में सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं।

उद्देश्य :

सामाजिक काव्य-सृजन की प्रेरणा के साथ-साथ छात्रा में समाज-कल्याण व उदारता कीभावना का पिकास करना और उन्हें श्रम का महत्व बताकर उसक पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरण देना इस पाठ का उद्देश्य है।

sakshieducation.com

कवि परिचय :

डॉ. रामधारी सिंह दिनकर हिन्दी के प्रसिध्द कवि माने जाते हैं। इनका जन्म सन् 1908 में मुगेर में हुआ और मृत्यु सन् 1974 में हुआ। 'उर्वशी' काव्य पर इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। रेणुका, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, परशुराम की प्रतीक्षा आदि इनको प्रमुख रचनाएँ हैं।

II. शब्दार्थ :

मनुज = मनुष्य, मानव

संचित करना = इकट्ठा करना, एकत्र करना

अर्थ = धन दौलत

भोगता = उपयोग में लाना

भाग्यवाद = भाग्य को मानना

छल = धोखा

पाप = कसूर, अपराध

नर-समाज = मानव का समाज

भाग्य = नसीब, किस्मत

भुजबल = भुजा की ताकत

सम्मुख = सामने

पृश्वी = धरती

झुकना = विनम्र होना, विनीत होना

विनीत = विनम्रता पूर्वक

नभ-तल = आकाश के नीचे

sakshieducation.com

श्रम-जल	=	स्वेद, पसीना
पीछे	=	बाद
विजीत	=	जीती हुई प्रकृति, संसार, चराचर
मत	=	नहीं
प्रकृति	=	संसार, चराचर
न्यस्त	=	रखा हुआ
धन	=	संपत्ति
धर्मराज	=	युधिष्ठिर
अधिकारी	=	भाग पाने वाला, हक पाने वाला
जन	=	लोग

III. प्रश्नोत्तर :

प्र.1. भाग्यवाद का छल क्या है?

उ. एक आदमी पाप करके धन संचित करता है तो दूसरा आदमी धोखे से छीन लेता है उस भाग्यवाद का छल कहते हैं।

प्र.2. नर समाज का भाग्य क्या है?

उ. नर समाज का भाग्य उसकी मेहनत और भुजाओं की शक्ति ही हैं।

प्र.3. श्रमिक के सम्मुख क्या-क्या झुके हैं।

उ. श्रमिक के सम्मुख पृथ्वी और आकाश झुके है।

sakshieducation.com

प्र.4. श्रम जल किसने दिया?

उ. मेहनत करने वाले हाथा ने श्रम जल दिया है।

प्र.5. मनुष्य का धन क्या है?

उ. प्रकृति में जो न्यस्त (रखा हुआ) है वह मनुष्य का धन है।

प्र.6. कण-कण का अधिकारी कौन है?

उ. कण-कण का अधिकारी जन-जन है।

IV. अर्थ ग्राह्यता - प्रतिक्रिया :

अ.1. भाग्यऔर कर्म में आप किसे श्रेष्ठ मानते हैं? क्यों?

उ. भाग्य और कर्म में कर्म ही श्रेष्ठ है। कर्म मनुष्य के भाग्य को बदल देता है। यदि व्यक्तिकर्मठ हो तो वह अपना भाग्य स्वयं बना सकता है। सिर्फ भाग्य के भरोसे बैठने से कोई भी कार्य नहीं हो सकता। इसलिए हमें कर्म पर विश्वास करके सफलता की ओर आगे बढ़ना चाहिए। बिना श्रम किए सफलता नहीं मिलती। भाग्य को तो वहीं कोसते हैंजो कर्महीन होते हैं।

प्र.2. श्रम के बल पर हम क्या क्या हासिल कर सकते हैं?

उ. श्रम के बल पर पर हम भाग्य को बदल सकते हैं। श्रम से मनुष्य अपने जीवन की सभी सुख सुविधाओं तथा अपनी इच्छाओं का पूरा कर सकता है। श्रम के व्दारा हम दूसरों से सम्मान पा सकते हैं। श्रम-बल से हम आकाश और धरती को भी झुकासकते हैं।

आ. पाठ पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नो के उत्तर लिखिए :

प्र.1. इस कविता के कवि कौन हैं?

उ. इस कविता के कवि रामधारी सिंह दिनकर हैं।

प्र.2. कविता का यह अंश किस काव्य से लिया गया है?

उ. कविता का यह अंश 'कुरुक्षेत्र' काव्य से लिया गया है।

प्र.3. सबसे पहले सुख पाने का अधिकार किसे है?

उ. श्रम करने वाले को सुख पाने का पहला अधिकार है।

प्र.4. कण-कण का अधिकारी किन्हे कहा गया है?

उ. भारत के जन-जन को कण-कण का अधिकारी कहा गया है।

इ. निम्नलिखित भाव से संबंधित पंक्तियाँ चुनिए।

1. धरती और आकाश इसके सामने नत मस्तक होते हैं।

2. प्रकृति से पहले परिश्रम करने वाले को सुख मिलना चाहिए।

3. जिसके सम्मुख झुकी हुई, पृथ्वी विनीत नभतल है।

उ. विजीत प्रकृति से पहले उसको सुख पाने दो।

ई. नीचे दिए गए पद्यांश पढ़िए। प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

कदम कदम बढ़ाए जा, सफलता तू पाये जा,
ये भाग्य है तुम्हारा, तू कर्म से बनाये जा,
निगाहे रखो लक्ष्य पर, कठिन नहीं ये सफर,

ये जन्म है तुम्हारा, तू सार्थक बनाए जा।

प्र.1. कवि के अनुसार सफलता किस प्रकार प्राप्त हो सकती है?

उ. कवि के अनुसार कदम कदम बढ़ाने से ही सफलता प्राप्त हो सकती है।

प्र.2. हमारा सफर कब सरल बन जाता है?

उ. लक्ष्य पर निगाह रखने पर हमारा सफर सरल बन जाता है।

प्र.3. इस कविता के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

उ. 'कदम-कदम बढ़ाए जा' इस कविता के लिए उचित शीर्षक है।

V. अभिव्यक्ति सृजनात्मक :

अ. इन प्रश्नों के उत्तर तीन चार पंक्तियों में लिखिए।

प्र.1. कवि मेहनत करने वालों को सदा आगे रखने की बात क्यों कर रहे है?

उ. जो अपना पसीना बहाकर मेह्नत करता है सबसे पहले उसे सुख मिलना चाहिए।

उसे ही सुख पाने का पहला अधिकार है। इसलिए हमें परिश्रम करने वालों के बारे में सबसे पहले सोचना चाहिए। उसे पीछे रखकर हम किसी भी राष्ट्र का विकास नहीं कर सकते।

प्र.2. अनुचित तरीके से धन राष्ट्र अर्जित करनेवाला व्यक्ति सही है या श्रम करने वाला?

अ. अपने विचार बताइए।

उ. अनुचित तरीके से धन कमाने वाला व्यक्ति सारी सुख सुविधाएँ हासिल कर सकता है। ऐसा व्यक्ति मन में हमेशा भय भीत रहता है। एक डर उसके मन में बना रहता है।

इसके विपरीत श्रम करने वाला व्यक्ति सीमित सुविधाएँ ही जुटाकर मन में प्रसन्न रहता है। उसके मन में कोई भय नहीं रहता है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि श्रम से अर्जित किया गया धन ही सही है।

आ. कवि ने मजदूरों के अधिकारों का वर्णन कैसे किया है? अपने विचार बताइए।

उ.कवि 'रामधारी सिंह दिनकर' राष्ट्रीय कवि है। उन्होंने इस कविता के माध्यम से मजदूरों के अधिकारों पर प्रकाश डाला गया है। कवि कहते हैं कि एक व्यक्ति अनुचित तरीके से धन अर्जित करता है तो दूसरा भाग्यवाद के छल से उस धन का सुख भोगता है। अर्थात पाप की कमाई सच्ची कमाई नहीं होती। कवि परिश्रम को ही समाजका सच्चा धन मानते है क्योंकि इस धन को कोई हमसे छीन नहीं सकता, चुरा नहीं सकता। इसलिए परिश्रमी बनकर जीवन में सफलता प्राप्त करनी चाहिए। परिश्रम के बल से हम आकाश को भी झुका सकते और धरती भी विनम्र बन जाती है।

परिश्रमी व्यक्ति के लिए कुछ भी असंभव नही है। मानव समाज में परिश्रम करने वालों को ही सुख पाने का पहला अधिकार है। प्रकृति में पाई जाने वाली सभी वस्तुओं पर सभी मनुश्य का समान अधिकार है। किसी को प्रकृति की चीजों पर एकाधिकार का हक नहीं है। प्रकृति की सभी चीजों पर सभी को समान अधिकार मिलनाचाहिए तभी हम राष्ट्र की उन्नति कर सकते हैं।

VI. विशेष :

आज मजदूर दिन-रात काम करने के बाद भी खुशहाल नहीं है क्योंकि कुछ स्वार्थी लोग उनके अधिकार को छीनकर दिनकर अपने विलासिता का साधन इकट्ठा कररहे हैं। उसे रोकना चाहिए।

इ. नीचे दिए गए प्रश्नों के आधार पर सृजनात्मक कार्य कीजिए (अध्यापक छात्रों से करवाएँ) (परियोजना के रूप मे)

ई. 'नर समाज का भाग्य एक है, वह श्रम, वह भुजबल है। जीवन की सफलता का मार्ग श्रम है अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उ. मानव समाज का एक ही भाग्य है वह है उसका श्रम और भुजाओं की शक्ति। परिश्रमी व्यक्ति का जीवन बहुत सरल होता है। उसकी इच्छाएँ सीमित रहती है, थोड़ी-सी वस्तु में भी वह प्रसन्न रहता है। जीवन की सपलता का रास्ता परिश्रम ही है इसलिए कहा गया है कि परिश्रम ही सफलता की कुंजी है। निरंतर श्रम करने वाला अपने जीवन में जरूर सफल होता है। मनुष्य परिश्रम से अपने भाग्य की रेखा को बदल सकता है। जीवन के सारे सुख सारी उच्छाएँ परिश्रम से प्राप्त हो सकती हैं। परिश्रम के सामने प्रकृति को भी झुकना पड़ता है। परिश्रमी व्यक्ति सच्चे अर्थो में आदर का पात्र है।

VII. भाषा की बात :

अ. कोष्ठक में दी गई सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1-जन, पृथ्वी धन (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए और उसके पर्याय शब्द लिखिए।)

VIII. व्याकरणांश :

वाक्य प्रयोग :

जन - हमारे राष्ट्र में सभी जन एक समान है।

पृथ्वी - पृथ्वी को रत्नगर्भा कहा जाता है।

धन - धन कमाने के लिए अनुचित कार्य नहीं करना चाहिए।

पर्याय शब्द :

जन - लोक, जनता, लोग

पृथ्वी - भूमि, धरा, वसुधा

धन - संपत्ति, संपदा, दौलत

2 **पाप, सुख, भाग्य (एक-एक शब्द का विलोम शब्द लिखिए)**

विलोम शब्द :

पाप × पुण्य

भाग्य × दुर्भाग्य

सुख × दुःख

वाक्य प्रयोग :

पाप - हमें पाप कार्य से दूर रहते हुए पुण्य कार्य करना चाहिए।

सुख - हम सुख में भगवान को भूल जाते हैं और दुख में याद करते हैं।

भाग्य - हमें अपने भाग्य पर अभिमान नहीं करना चाहिए तथा दूसरों के दुर्भाग्य पर हँसना भी नहीं चाहिए।

3. **जन-जन, कण-कण (पुनरुक्ति शब्दों से वाक्य प्रयोग कीजिए)**

वाक्य प्रयोग :

जन-जन - वर्षा के कारण जन-जन का मन पुलकित हो उठा।

कण-कण - ईश्वर कण-कण में निवास करते है।

sakshieducation.com

4. **मजदूर मेहनत करता है। (एक-एक शब्द का वचन बदलिए और वाक्य प्रयोग कीजिए।)**

मजदूर - मजदूरों - मजदूरों ने काम करने से इनकार कर दिया।

मेहनत - किसान मेहनत करके जीवन बिताते हैं।

करता है - मजदूर मिल में काम करते हैं।

5. **मनुष्य, मजदूर (भाववाचक संज्ञा में बदलकर लिखिए)**

मनुष्य - मनुष्यता / मजदूर - मजदूरी

आ. सूचना पढ़िए - उसके अनुसार कीजिए

अधिकार - अधिकारी, भाग्य - भाग्यवान (अंतर बताए)

1. सभी नागरिक को समान अधिकार मिले हैं।
2. वह दंड का अधिकारी है।
3. भाग्य - सुख गरीब के भाग्य में नहीं है।
4. भाग्यवान - अच्छी संतान भाग्यवान लोगों को मिलती है।

2. **यद्‌यपि, पर्यावरण संधि विच्छेद कीजि।**

यदि + अपि - यण स्वर संधि

परि + आवरण - यण स्वर संधि

3. **श्रमजल , नभतल, भुज-बल (समास पहचानिए)**

श्रमजल	- श्रम रुपी जल	-	कर्मधारय समास
नभतल	- नभ का तल	-	तत्पुरुष समास
भुजबल	- भुजाओं का बल	-	तत्पुरुष समास

sakshieducation.com

4. एक मनुज संचित करता है, अर्थ पाप के बल से और भोगता उसे दूसरा, भाग्यवाद के छल से।

एक-विशेषण, सख्यावाचक, एकवचन, पुल्लिंग और - 'और' समुच्चय बोधक अव्यय।

5. **जिसने श्रम-जल दिया-उसे पीछे मत रह जाने दो कारक पहचानिए।**

इ-इन्हें समझिए सूचना के अनुसार कीजिए जाने दो, पाने दो, बढ़ने दो

उ. उसे रोको मत जाने दो।

उसे गेंद पाने दो

उसे आगे बढने दो

जाने दो, पाने दो, बढ़ने दो

इन सभी में दो क्रियाएँ है इस लिए इन्हें संयुक्त क्रिया कहते हैं)

2. **एक - पहला, प्रथम, दो-दूसरा, व्दितीय (अंतर समझिए)**

उ. मैने एक आम पाया।

मुझे दसवी कक्षा में प्रथम श्रेणी मिला।

मझे दो पैसे दीजिए।

एक आदमी पकड़ा गया और दूसरा भाग गया।

वह व्दितीय श्रेणी म उत्तीर्ण हुआ।

एक, पहला (संख्यावाचक विशेषण है)

प्रथम व्दितीय (संस्कृत के विशेषण शब्द है।)

sakshieducation.com

3. **अभाग्य, दुर्भाग्य, सुभाग्य (उपसर्ग पहचानिए)**

उ. अभाग्य - 'अ' दुर्भाग्य - 'दुर्' सुभाग्य - 'सु'

4. **प्राकृतिक, भाग्यवान, अधिकारी, प्रत्यय पहचानिए।**

उ. प्राकृतिक - इक, भाग्यवान - वान अधिकारी - ई

5. **पुरुष श्रमिक के रु में काम करते हैं (लिंगबदलकर वाक्य लिखिए)**

उ. स्त्री श्रमिक के रूप में काम करती है।

ई. नीचे दिया गया उदाहरण समझिए। उसके अनुसार दिए गए वाक्य बदलिए।

जैसे: किसने श्रम-जल दिया उसे पीछे मत रह जाने दो। श्रम जल देने वाले को पीछे मत रह जाने दो।

1. **जो कुछ न्यस्त प्रकृति में है, वह मनुजमात्र का धन है।**

उ. प्रकृति में न्यस्त धन मनुज मात्र का है।

2. **जो मेहनत करता है वही कण-कण का अधिकारी है।**

उ. मेहनत करने वाला ही कण-कण का अधिकारी है।

3. जो परोपकार करता है वही परोपकारी कहलाता है

परोपकार करने वाला ही परोपकारी कहलाता है।

पाठ संबंधी अतिरिक्त व्याकरण :

सूचना के अनुसार बदलिए।

1. एक मनुज संचित करता है (रेखांकित शब्द का वचन बदलकर लिखिए)

उ. अनेक मनुज संचित करते हैं।

2. नर समाज का भाग्य एक है (रेखांकित शब्द का लिंग बदल कर वाक्य लिखिए)

उ. नारी समाज का भाग्य एक है।

3. उसको सुख पाने दो । (रेखांकित शब्द का वचन बदल कर वाक्य लिखिए)

उ. उन्हें सुख पाने दो।

4. कवि कविता लिखता है (रेखांकित शब्द का लिंग बदलकर वाक्य लिखिए)

उ. कवयित्री कविता लिखती है।

5. वे श्रम जल देते हैं। (रेखांकित शब्द का वचन बदलकर वाक्य लिखिए)

उ. वह श्रम जल देता है।

6. वह श्रम कर रहा है।

उ. वे श्रम कर रहे हैं।

7. मुझे सुख पाने दो (रेखांकित शब्द का वचन बदल कर वाक्य लिखिए)

उ. हमें सुख पाने दो

sakshieducation.com

काल बदलना

नीचे दिए गए वाक्यों के काल सूचना के अनुसार बदलिए।

1. **वह मनुजमात्र का धन है। (भूतकाल में बदलकर (लिखिए)**

उ. वह मनुज मात्र का धर्म था।

2. **कण-कण का अधिकारी जन-जन है। (भविष्यतकाल में बदलिए)**

उ. कण-कण का अधिकारी जन-जन होगा।

3. **एक मनुज संचित करता था। (वर्तमान काल में बदलिए)**

उ. एक मनुज संचित करता है।

4. **नर समाज का भाग्य एक है। (भूतकाल में बदलिए)**

उ. नर समाज का भाग्य एक था।

5. **उसे दूसरा आदमी भोगेगा। (वर्तमान काल में बदलिए)**

उ. उसे दूसरा आदमी भोगता है ।

sakshieducation.com